Year 01 | Vol. 03

डेल्फ़िक डाइजेस्ट

DELPHIC DIGEST

QUARTERLY NEWSLETTER OF DELPHIC COUNCIL OF **RAJASTHAN**

APRIL 2022

15 JAN 2022

संपादकीय

डेल्फिक कांउसिल ऑफ राजस्थान के Newsletter का तीसरा अंक हम सब के लिए खास है। क्योंकि जनवरी 2022 से D C R द्वारा ऑनलाइन कार्यक्रमों की श्रंखला 'डेल्फिक डायलॉग्स' के साथ ऑफलाइन और क्यूरेटेड गतिविधियों को भी शामिल किया गया है।

DCR अध्यक्ष महोदया और महासचिव महोदय के नेतृत्व में हमने डेल्फिक मूवमेंट में शुमार विभिन्न कला एवं संस्कृति आयामों को अपने कार्यक्रमों में संजोने का प्रयास किया। जिनमें विजुअल आर्ट, संगीत, नाटक, लोक कला, सिनेमा के साथ ही इकोलॉजिकल आर्ट और कंजर्वेशन का भी विशेष स्थान रहा।

इन कार्यक्रमों को आयोजित करना वर्चुअल माध्यम से अधिक चुनौती भरा और रोमांचक था। क्योंकि कला हो या क्राफ्ट, जो अनुभव सजीव प्रस्तुति व साक्षात मंचन में है वह स्क्रीन पर सम्भव नहीं है। यह कहना प्रासंगिक होगा कि कलाप्रेमियों और दर्शकों ने हमारी गतिविधियों को बड़ी संख्या में उपस्थिति से सराहा और डेल्फिक मूवमेंट से जुड़ने की इच्छा व्यक्त की।

हम सम्पादक मंडल की ओर से अंक में हुई किसी भी त्रुटि के लिए क्षमा माँगते हुए आपके सुझावों और फ़ीडबैक का इंतज़ार करेंगे।

निशान्त जैन, शिप्रा शर्मा, राहुल सूद, नवीन त्रिपाठी, फुरक़ान खान

DELPHIC DIALOGUE

परंपरा, मध्यकाल और हिंदी साहित्य

15 JAN 2022

"परंपरा, मध्यकाल और हिंदी साहित्य" विषय पर 15 जनवरी को आयोजित ऑनलाइन "डेल्फिक डायलॉग्स" में हिंदी के प्रख्यात लेखक समालोचक और संपादक श्री माधव हाड़ा और बनास जन के संपादक और युवा गंभीर लेखक श्री पल्लव ने भाग लिया। चर्चा का संचालन प्रसिद्ध सूत्रधार मोहिता दीक्षित ने किया।

चर्चा में माधव हाड़ा ने कहा कि आधुनिकता, परंपरा की निरंतरता में ही संभव होती है। हिंदी साहित्य का विकास भी निरंतर होता रहा है। मध्य काल से लेकर वर्तमान तक जितना भी साहित्य लिखा और पढ़ा गया है, वह तत्कालीन समय को परिभाषित करता है। हाड़ा और पल्लव ने परंपरा मध्यकाल और हिंदी साहित्य पर विस्तारपूर्वक चर्चा करते हुए बताया कि आमतौर पर विमर्श परंपरा और आधुनिकता को एक-दूसरे के विरोध में रखा जाता है, परंतु ऐसा नहीं है।

किसी को भी कमतर आंकना सही नहीं।

परंपरा के अकारण विरोध में खड़े रहने को मुश्किल बताते हुए हाड़ा ने कहा कि ऐसा करने पर आपको समाज के बहिष्कार का सामना करना पड़ता है। हाड़ा की पुस्तक पचरंग चोला का जिक्र करते हुए पल्लव ने अवगत करवाया कि अंध दृष्टिकोण से किसी को देखना गलत है। यह एक तरह से जड़ता का प्रतीक है। हिंदी साहित्य में परंपरा को किसी

एक दृष्टिकोण से नहीं देखने का जिक्र करते हुए हाड़ा ने बताया कि हर समय में सामग्री, श्रोता व संसाधन अलग-अलग हुए हैं। इसलिए किसी को भी कमतर आंकना सही नहीं रहेगा। परंपरा की निरंतरता में ही आधुनिकता संभव हो पाती है। परंपरा का अग्रगामी कदम आधुनिकता होती है। जो परंपरा अपनी पृष्ठभूमि और अपनी खाद-पानी से संभव नहीं हुई है, वह आधुनिकता नहीं है। अंत में सूत्रधार दीक्षित ने माधव हाड़ा और पल्लव का आभार जताया।

DELPHIC DIALOGUE

Folk Paintings of Rajasthan

29 JAN 2022

In the month of January, 2022, DCR organised an online discussion focused on the Folk Paintings of Rajasthan. Dr. Pankaj Dharendra, Archeaologist and Museologist and Mr. Abdul Lateef Usta, Art and Heritage Expert described the inherent, intrinsic as well as extrinsic aspects of prevalent folk painting traditions of Rajasthan including Phar , Pichhwai, Kavad, and Maandna. The discussion included an assortment of visual aids and also described the various lesser known aspects of the fraternity including art practice process and history. The objective of the discussion was to create an awareness among the artists, art connoisseurs and the mass, for promotion and conservation of folk paintings of Rajasthan, which is on the verge of serious decline.

DELPHIC DIALOGUE

Re-wilding in Urban Landscapes

12 FEB 2022

Delphic Council of Rajasthan showcased a unique natural heritage conservation intervention: Kishanbagh Jaipur. Kishan-bagh, a project of Jaipur Development Authority embodies the concept of rewilding as an alternative to creation of parks and gardens. DCR along with Forest & Environment Department, Rajasthan produced a documentary film in the form of a walk-around conversation at Kishanbagh between Mr Vijay Dashmana (a key member of the team that worked on the Kishanbagh project) and Mr Arijit Banerjee, Additional Principal Chief Conservator of Forests, Rajasthan.

The documentary, Rewilding in Urban Landscapes – The Kishan- bagh Experience, was screened as the 26th Delphic Dialogue on the 12th of February.

Here's an excerpt from an article on Kishanbagh by **Mr Arijit Banerjee;**

On a crispy winter morning when the sun is young, you walk up to the small ticket counter. As you get your ticket you notice signage that tells you that plastic bottles and packaged munchies are a no-no and that every hour there shall be a curated walk by a naturalist. Not something that happens usually in our urban parks and gardens. As you walk up the wooden pathway you can't help but notice banisters fashioned out of poles and if you look up to your left, a sleepy Spotted Owlet can be seen

on the ticket house girders, giving you the stare.

Flashback 2015. The fossilised sand dunes at the edge of Nahargarh Wildlife Sanctuary in Jaipur resembled dirt heaps. Encroached upon and filthy. Jaipur Development Authority, who administers an urban park nearby reached out to Pradip Kishan, ecologist and landscape restorer for inputs on how to do up the city's gardens. Pradip was candid enough to state that he and his team weren't really interested in municipal gardens. At the end of a long day looking at various open spaces, Pradip saw these old dunes and found them both interesting and an intellectual challenge.

The project took off. The area was fenced, cleaned up and development was planned with the clear aim of creating islands of habitat types from different parts of Rajasthan. A simple, yet at that point, unheard of intervention within the government was to bring in soil from the desert districts and spread them in selected areas. Whatever sprouts in the rains and survives is a representative floral component!

By now you have reached a roundhouse. Very ethnic, very tastefully done. You get to see excellent signage explaining the area and its geological history. As you move ahead on the trail, you will realise that the vegetation is changing from sparse deciduous woods to scrub and grass. Depending on the season you can expect the pink and yellow Goya Khair in bloom and the near phosphorescent Bui. An array of rock samples are placed off the trail with the history of the planet and human evolution.

A short walk brings you to a

stylised pool. Shallow and full of indigenous aquatic vegetation. In summer you can expect a few Bullfrogs. There are some fishes too. The dainty flowers of wild water lilies greet the rising sun.

At the top of this dune is a long house - a traditional thatched structure with rough hewn benches to rest your feet. Afar on one side is an urban sprawl. To the east are the imposing hills of Nahargarh, its slopes covered by Dhok forests. A Francolin calls, a few Quails fly off disturbed.

You walk ahead and down. You are in the Roee. Tall grass, scrub, Kheenp, Jaal. Rooe, a long-established vernacular term in the north-western parts of this subcontinent, describes the interdunal vegetation. An incredible mix of annual plants and grasses - some ephemeral, some lasting a few months - flowering and seeding quickly to ensure the survival of their lineage. As the season progresses, the greens become yellow and then brown, beautiful nonetheless, waiting for another monsoon.

By now you have climbed down a couple of flights of stairs to a pond. The water is crystal clear and you can see the shadows of small fish swimming around. The sedges and the water plants are growing well. If you look around, expect a few Porcupine quills and a pugmark. A Leopard came for water the previous night.

Kishanbagh is one of India finest examples in Ecosystem restoration and rewilding. It also is a template on how an urban wilderness needs redefining – the need to move away from the colonial idea of a well laid out English Garden – and re-embracing the wilds as we in India have always known.

DELPHIC DIALOGUE

मोहन वीणा और पं विश्व मोहन भट्ट

12 MAR 2022

डेल्फिक कांउसिल ऑफ राजस्थान द्वारा A discussion on **"मोहन वीणा और पं. विश्व मोहन भट्ट"** वर्चुअल टॉक सेशन का आयोजन दिनांक 12 मार्च 2022 को किया गया। यह डेल्फिक डायलॉग्स की कड़ी का छब्बीसवाँ कार्यक्रम था।

ग्रैमी अवॉर्ड से सम्मानित पंडित विश्व मोहन भट्ट ने बताया कि उनका परिवार पिछले 300 साल से संगीत में है इसलिए उन्हें संगीत विरासत में मिला है। उन्होंने बताया कि कैसे 55 साल पहले पंडित रवि शंकर जी की प्रेरणा से उन्होंने 6 तार वाले गिटार को 20 तार वाले मोहन वीणा में बदला और इस वाद्य को विश्व प्रसिद्ध बनाया।

कथक नृत्यांगना और डेल्फिक कांउसिल ऑफ़ राजस्थान की सदस्य मनीषा गुल्यानी ने इस सत्र का मॉडरेशन किया।

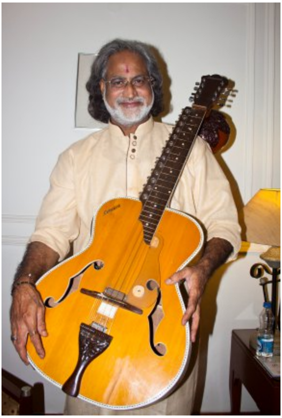

द गेम ऑफ डाइस - नृत्य नाटिका

26 FEB 2022

डेल्फिक कांउसिल ऑफ़ राजस्थान द्वारा कला एवं संस्कृति को प्रोत्साहन देने हेतु इस बार महिला एवं बाल विकास विभाग के साथ सहयोग कर 26 फरवरी शनिवार को जवाहर कला केन्द्र के रंगायन सभागार में **"द गेम ऑफ डाइस"** का मंचन करवाया गया । महाभारत पर आधारित इस नृत्य नाटिका का शानदार मंचन देखकर दर्शक अभिभूत हो गए। संतोष नायर द्वारा निर्देशित इस नृत्य नाटिका में परम्पराओं में निहित महिला सशक्तीकरण का अनुपम चित्रण किया गया।

नृत्य नाटिका के केंद्र में महाकाव्य महाभारत की प्रमुख चरित्र द्रोपदी की विपदा को बहुत ही प्रभावी ढंग से प्रस्तुत किया गया। यद्यपि इसमें घटनाक्रम महाभारत से लिया गया है, परंतु इसके माध्यम से नारी के प्रति अनादर और उस पर होने वाले अत्याचारों पर समाज की उदासीनता पर होने वाले आक्रोश को दर्शाया गया। लगभग 1 घंटे की इस नृत्य नाटिका में भारतीय परंपरा में निहित द्रौपदी के प्रतिरोध को मयूरभंज छाऊ नृत्य शैली में बहुत ही रचनात्मक ढंग से प्रस्तुत किया गया है। नृत्य नाटिका के निर्देशक संतोष नायर ने बताया कि इस नाटिका का उद्देश्य नारी प्रतिरोध को कलात्मक स्वरूप देकर महिला सशक्तिकरण का संदेश जन-जन तक पहुंचाना है । इस सम्पूर्ण कार्यक्रम का संयोजन डेल्फिक कांउसिल ऑफ़ राजस्थान के कार्यकारिणी सदस्य फुरक़ान खान द्वारा किया गया था ।

इस अवसर पर राजस्थान सरकार की मुख्य सचिव ऊषा शर्मा, राज्य महिला आयोग की अध्यक्ष रेहाना रियाज चिश्ती, प्रमुख शासन सचिव महिला एवं बाल विकास श्रेया गुहा और महिला अधिकारिता निर्देशक रश्मि गुप्ता सहित विभिन्न जानी-मानी हस्तियों ने कार्यक्रम का आनंद लिया।

Haasya Chudamani - Comedy Play

30 MAR 2022

In March Delphic Council of Rajasthan supported the drama **'Haasya Chudamani'** by Sourabh Anant at 'Rang Rajasthan' festival, in a run up to 'Rajasthan Diwas celebrations on 30th march.

The Rang Mastaane group led by festival director Sh Abhishek Mudgal organised the eight day long theatre and folk art festival at Jawahar Kala Kendra.

The play is based on the Hindi translation of an 11th century Sanskrit Comedy or Prahsana by Vatsaraj. The musical play in bundeli dialect made the audience laugh with its situational comedy and contemporary one liners.

The Rangayan auditorium at Jawahar Kala Kendra was filled to capacity with distinguished audience like the state minister for art and culture Sh B D kalla and senior members of bureacracy.

The President of DCR, Mrs Sreya Guha, Principal secretary, Environment and Forest, Rajasthan felicitated the Director Sourabh Anant at the conclusion of the play.

Mazar-e-Laila Majnu - Film Screening

9 APR 2022

डेल्फिक कांउसिल ऑफ राजस्थान द्वारा अनेक अवॉर्ड से सम्मानित फिल्म “मज़ार ए लैला मज़नू” की स्क्रीनिंग जवाहर कला केंद्र के कृष्णायन सभागार में 9 अप्रैल शनिवार को श्याम 6 बजे की गयी। जयपुर के जाने-माने अभिनेता, निर्देशक और फिल्मों के निर्माता राहुल सूद की फ़िल्म "मज़ार ऐ लैला मज़नूं" ने दर्शकों पर अमिट छाप छोड़ी और सभी ने ये महसूस किया कि राजस्थान में अभी ऐसे बहुत से स्थान हैं जो पर्यटन की दृष्टि से बहुत कामयाब हो सकते हैं परन्तु जानकारी के अभाव में पर्यटन मानचित्र में सम्मिलित नहीं किये गये।

22 मिनट की इस लघु फिल्म में, श्रीगंगानगर ज़िले की अनूपगढ़ तहसील के एक मज़ार और उस पर लगने वाले मेले पर फोकस किया गया है। इस मज़ार को स्थानीय लोग लैला मज़नूं की मज़ार कहते हैं और प्रतिवर्ष यहां लगने वाले मेले में लाखों की संख्या में लोग भाग लेते हैं। फिल्म में लैला मज़नूं की कथा से सम्बंधित बहुत अच्छी रिसर्च की गई है। इसमें लैला मज़नूं पर अब तक बनी फिल्मों को याद करने के साथ साथ विशेषज्ञों के विचार और संवाद को भी स्थान दिया गया है।

डेल्फिक कांउसिल की अध्यक्ष श्रेया गुहा ने फ़िल्म की भूरी-भूरी प्रशंसा करते हुए बताया कि ये आयोजन डेल्फिक के पाक्षिक आयोजन का ही एक हिस्सा था और उन्हें गर्व है कि राहुल सूद डेल्फिक कांउसिल के बोर्ड मेम्बर भी हैं। उन्होंने ये भी आशा व्यक्त की कि पर्यटन विभाग इस ओर ध्यान देगा और गंगानगर में इसके साथ-साथ अन्य पर्यटन स्थल भी विकसित होंगे।

स्क्रीनिंग के समय कई गणमान्य लोग उपस्थित रहे। वरिष्ठ आईएएस अधिकारी और डेल्फिक कांउसिल ऑफ़ राजस्थान की अध्यक्ष श्रीमती श्रेया गुहा, रिटायर्ड आईपीएस श्री जसदंत सम्पतराम, ग़ज़ल गायक उस्ताद अहमद हुसैन, मोहम्मद हुसैन, सेक्रेटरी जनरल डेल्फिक कांउसिल

ऑफ़ राजस्थान और आईएएस डॉ जीतेन्द्र सोनी, आईएएस श्री निशांत जैन, संस्कृतिकर्मी और रिटायर्ड आईएएस श्री महेंद्र सुराणा, पोएट और रिटायर्ड आईपीएस श्री विपुल चतुर्वेदी, डेल्फिक कांउसिल ऑफ़ राजस्थान की कोषाध्यक्ष शिप्रा शर्मा, पंकज ओझा, राज बंसल आदि।

स्क्रीनिंग का आयोजन डेल्फिक कांउसिल ऑफ राजस्थान द्वारा जवाहर कला केंद्र के सहयोग से किया गया था।

27 FEB 2022

DCR Team Bonds over a Picnic

At the conclusion of one of DCR's online meetings I pitched in my request to PDCR Ma'm to have our next meeting at one of the wild life reserves. She headed the forest department, after all! And what better plan than a picnic in the wild to unwind after having regular online events every Saturday! Ma'm smiled and agreed to the proposal, seconded by our Secretary general Jitendra Soni ji. Tejaswini Gutam ji very generously offered to host the next meet at Sariska wild life sanctuary.

But in the coming months of a harsher than usual winter, and things being pretty hectic for everyone with new assignments at work, the plan never took off.

So, I was pleasantly surprised and excited, when in February PDCR Ma'm asked me to plan that much awaited excursion! It was getting warmer in the daytime, so an early morning outing to Jhalana Leopard Safari with picnic at

the Shikar Oudhi seemed our safest bet! And Ma'm made it all the more special for me by announcing that the outing will be my birthday celebration!

For those unaware, Jhalana Leopard Park is a wild life reserve in the very heart of Jaipur. It is like one moment you are in the concrete urban jungle, and the very next the park gates, like the fictional Narnia, engulf you into the wilderness of a series of undulating hills blanketed with dense foliage!

It was a chilly February morning. I rushed to reach before 6 am, the appointed time, but found that Nishant Jain ji and Naveen Tripathi ji had already reached! Rahul Sood ji, PDCR Ma'm and Manisha Guliyani ji soon drove in too. The whole group was visibly excited, more so because of the two veterans of the forest force, Sh Gobind Sagar Bharadwaj and Sh Arijit Banerjee accom-panying us. Both IFS officers, naturalists and renowned photographers. Their commentary on the forest, flaura and fauna made the next five hours an unforgettable experience. Both of them and Sreya ma'm not only shot a series of perfect shots with their cameras, but kept us in splits with their funny anecdotes too.

We began the sightings with a riot of laughter as someone jumped in excitement believing the leopard figure atop the entry gate to be a real one! we set upon a wild and boisterous roller-coaster ride...

It began with an owlet nesting in her tower, posing with much ease as if having her morning cuppa. A migrating Eurasian Sparrowhawk, meditating in a tiny picturesque pool of water, planning his bathing ritual was next. Spotted deer, Neelgais, Turtles, Cranes, Owls, and a variety of local and migratory birds followed.

And then came the star of the show. Yes! The much awaited 'sighting'! The prince of this habitat, a young leopard, a teenager, as pointed out by the veterans, coolly walking up the hills. Taking an early morning nap in the warm sunlight, he gave ample opportunity to the shutterbugs for shots from all angles.

'Mission Accomplished', we now marched towards the 'Shikar Oudhi' at the top of the forest. It was a welcome sight to starving stomachs as the safari and the morning cold had roused our appetites hugely!

The food was delicious fare, Samosa, Jalebi, Dhokla, fruits, Sandesh and my birthday cake, washed down with cups of hot Tea and Coffee. Soon the serene Shikar Oudhi was vibrating with the hum of our conversation. Who better than the leader of the group herself to regale us with tales, tidbits and humorous observations. We also got to hear first hand accounts of his postings from Nishant ji. With a few Kipling and Corbett stories by Arjit Sir, it turned into truly vintage stuff! Selfies and group photos were shot at this juncture to save the memories forever. The last sighting of a black-winged kite perched on the edge of a branch was already our post picnic conversation topic as we bid goodbyes!!

We bonded as a close knit group with warmth and camaraderie because of this picnic and this would not have happened if we had not come together as a Delphic Society under the leadership of our President, Sreya Ma'm.

The icing on the cake was this piece of chat on our official watsapp group:

Me: "Such outings should be done every two three months, Ma'm!"

Ma'am: **"You can start planning the next picnic!!"**

~ Shipra Sharma

INTERNATIONAL DELPHIC COUNCIL

27 YEARS 1994-2021

DELPHIC COUNCIL OF RAJASTHAN

E: info@DelphicRajasthan.org
Room #9, Ground Floor,
Harish Chandra Mathur Rajasthan
Rajya Lok Prasashan Sansthan,
Jawahar Lal Nehru Marg, Jaipur 302017, Rajasthan, India